संपादक की कलम से.....

और क्या होंगे अभी

रामअवतार बैरवा

जब हम छोटे थे तब माता–पिता छोटी–छोटी बातों पर डांट दिया करते थे । खेलते समय खासकर। स्कूल में अलग से खेल की बाकायदा एक क्लास हुआ करती थी मगर घर पर खेलने की सख्त मनाही थी। कारण सिर्फ और सिर्फ यह था कि उनके पास अनुभव था । समय सबसे बड़ा शिक्षक होता है। यह बहुत सिखाता है। आज हम भी बच्चों को उन्हीं बातों पर डांटते हैं । हम छोटे–छोटे लोग कितने बड़े होते हैं कि जरा–जरा–सी बात को जीवन से जोड़कर देखते हैं ; चोट लग जाएगी, हाथ–पैर से दिव्यांग हो जाओगे। शादी नहीं होगी, वंश नहीं चलेगा... वगैरह–वगैरह। ...और उन बड़े–बड़े लोगों को देखिए – वो अच्छी तरह जानते हैं कि मिसाइल से कम–से–कम एक व्यक्ति को तो मरना ही है, दूसरे शब्दों में कहा जाए किसी को मारना या तबाह करना एक मिसाइल का लक्ष्य है। ये शौर्य, ये पैसा, ये मान–सम्मान सब ईश्वर का दिया होता है। वो जब चाहे छीन सकता है। मैंने अपने गांव या गली मौहल्ले में किसी गरीब को, किसी से लड़ते हुए नहीं देखा। एक विधवा के घर तक पहुंचने की गली महज दो फिट है मगर वो किसी से रास्ता मांगने की हिम्मत नहीं करती , सारा भार , सारा कार्य, सारी खुशियां, सारे ग़म सिर पर ढोकर सह लेती है । सारी दीवाली, होली एक तरह के कपड़ों में निकाल लेती है। सर्दी, गर्मी, बरसात सब इनसे और इनके बच्चों से दूर रहते हैं। लोग बात–बात पर टोकते, डांटते भी है मगर हर बात को हंसकर टाल देना, इनकी खुशियों में समा गया है।

हैती, बुरुंडी, कांगों जैसे देश क्यों नहीं किसी पर आक्रमण करते ? पूरा जीवन महज रोटी की लड़ाई में बीत जाता है। जानवरों को मारकर खाने के लिए धारदार हथियार खरीदने के पैसे इनके पास नहीं हैं इसलिए उसे पकड़कर सीधे आग में डाल देते हैं। सिर पूरी तरह जला नहीं होता है। पैर के खुर पक जाते हैं। भूख के मारे अधपके जीव को पैर की तरफ से खाना शुरू कर देते हैं। मात्र दस मिसाइल के खर्च में एक गरीब देश विकास की सीढ़ियां चढ़ सकता है। दुनिया में नाम किसी को तबाह करने से नहीं होता है, आबाद करने से होता है। कोई भी देश लड़ाई का जवाब किसी गरीब देश में गोद लेकर दे तो कथाएं कुछ भी कहें, वो पूरी धरा का सिरमौर हो सकता है। भारत इसीलिए हर बार अपना गुरुत्व दिखाता है। अगर उन्हें इंसानियत दिखाई देती है तो अभिमान से उतरकर दिल के किसी कोने को टटोले– कोई मां बहुत दूर से चोंच में दाना लेकर अपने बच्चों की भूख मिटाने के लिए उस मिसाइल से तेज उड़ने की कोशिश कर रही है। कोई डरी हुई बेघर खुले गगन तले किसी ठेली के नीचे अपने बच्चों को गोद में लेकर इस उम्मीद में बैठी है कि शायद ये ठेली उसे मिसाइल से बचा लेगी ।

पानी इस धरती पर उतना ही है, जितना आरंभ में था। न एक बूंद कम हुआ है न ज्यादा, और न ही कभी होगा। मगर तेल बहुत सीमित है। यह खत्म होने की कगार पर है। वैकल्पिक व्यवस्था अचानक नहीं हो सकती, ये तबाही के बाद ही संभव है। कभी–कभी बुरी बात बहुत अच्छी लगती है कि काश हम सब गरीब ही होते । ये बम, ये मिसाइलें, ये इतना विकास नहीं हुआ होता। हम भगवान न हुए होते, इंसान ही रहते। एक माचिस की तीली से पूरा गांव चूल्हा जला लेता। दीपक तले किताबें पढ़ते, कांटे से कांटा निकालते। प्यार बांटते, प्यार बढ़ाते। विकास के बरगद तले सचमुच बहुत याद आती है माता–पिता की वो डांटें ।